Remove Watermark Now

10 हिंदी प्रश्न बैंक
NEW STEWART SCHOOL CUTTACK,
SESSION - 2021-22

व्याकरण (SECTION-A)

निबंध लेखन

किसी भी तरह की पठित सामग्री भाव या विचार को सुनियोजित ढंग से अपनी भाषा में प्रस्तुत करना ही निबंध है।

निबंध के प्रारूप को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. प्रारंभ- निबंध का प्रारंभ आकर्षक एवं विषय को स्पष्ट करने वाला होना चाहिए जो पाठक का ध्यान आकर्षित कर सके। आरंभ कविता की पंक्तियों,किसी दृष्टांत,विषय से संबंधित किसी महापुरुष के कथन या विषय को स्पष्ट करने वाले वाक्य से होना चाहिए । आरंभ में, कम शब्दों में पाठक को विषय से अवगत कराने की क्षमता होनी चाहिए।

2. मध्य– इसका सीधा संबंध निबंध के विषय से होता है। यह निबंध का सबसे महत्वपूर्ण भाग होता है। इस भाग में विषय का विस्तृत वर्णन होता है। इस वर्णन में दृष्टांत,विचारकों एवं साहित्यकारों के श्रेष्ठ कथन, किसी कवि की विषयानुकूल कविता की कुछ पंक्तियां ,कोई शिक्षाप्रद सूत्र या श्लोक की पंक्ति,रामचरितमानस की चौपाइयां आदि सम्मिलित की जा सकती हैं। इसमें मुख्य विषय का विस्तार होने के साथ–साथ विचार या बात का क्रमबद्ध एवं तर्कसंगत वर्णन होना चाहिए।

3. अन्त–निबंध का अंत संक्षिप्त, प्रभावशाली एवं सारगर्भित होना चाहिए। संपूर्ण निबंध के संबंध में लेखक का दृष्टिकोण अंत के कुछ वाक्यों में स्पष्ट होना चाहिए। निबंध का अंत संपूर्ण निबंध की सफलता का आधार है।

परीक्षा उपयोगी निबंध लेखन के कुछ विषय

1. हमारी धरती और बढ़ रहा ग्लोबल वार्मिंग
2. कंप्यूटर एवं मोबाइल फोन आज की आवश्यकता
3. आधुनिक युग में कम हो रहे पुराने संस्कार
4. बढ़ती गर्मी की वजह से जल संकट– एक विकट समस्या
5. देश में बढ़ता भ्रष्टाचार
6. आलस्य–मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु
7. "जाको राखे साइयां मार सके ना कोई " इस उक्ति के आधार पर एक कहानी लिखिए।
8. घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाने का अनुभव अपने शब्दों में लिखें।
9. वृक्ष की आत्मकथा लिखें।
10. चित्र देखकर आपके मन में जो विचार आ रहे हैं उन्हें कहानी के रूप में लिखें।

pdfelement

Remove Watermark Now

पत्र लेखन (अनौपचारिक)

1. आपकी छोटी बहन पहली बार घर से दूर पाश्चात्य संगीत की शिक्षा के लिए विदेश जा रही है । वह परेशान और दुखी है। उसे समझाते हुए प्रोत्साहित कीजिए ।

छात्रावास
दयालबाग शिक्षण संस्थान।
दिनांक 12-05- 2021
प्रिय पिंकी,
सस्नेह आशीर्वाद ।
तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ।सर्वप्रथम तुम्हें बहुत-बहुत बधाई, तुम्हें विदेश जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। तुम्हें परेशान या दु:खी होने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि तुम अपने लक्ष्य के पथ पर आगे बढ़ रही हो। केवल 2 वर्ष के लिए ही तो परिवार से दूर जा रही हो। कुछ बनने बनने के लिए थोड़ा त्याग तो करना ही पड़ता है। मुझे भी पढ़ाई पूरी कर कुछ बनने के लिए छात्रावास में रहना पड़ रहा है। हमें अपने मां-बाप का नाम रोशन करने के लिए कुछ दिन का उनसे अलगाव सहना ही पड़ेगा। तुम खुशी-खुशी जाओ और अपनी शिक्षा पूर्ण कर नाम कमाओ तथा हम सबका नाम रोशन करो। हम सबकी खुशी इसी में है कि तुम अपने लक्ष्य तक पहुंचो। माताजी व पिताजी को मेरा चरण-स्पर्श कहना।
तुम्हारा अग्रज,
अजय

pdfelement

पत्र लेखन (औपचारिक)

(2) आपकी बैंक पासबुक हो गई है। आप इणिडयन बैंक के मैनेजर को आवेदन- पत्र लिखकर पासबुक की दूसरी प्रति जारी करवाने का अनुरोध करें।

सेवा में,
बैंक मैनेजर,
इण्डियन बैंक,
आगरा।
विषय:दूसरी पास बुक जारी करने हेतु पत्र।
महोदय,
विनम्र निवेदन है कि आपके बैंक में पिछले दस सालों से मेरा खाता है। मेरा खाता क्रमांक 012345 है। मेरी पासबुक खो गई है।
आपसे अनुरोध है कि मेरी पासबुक की दूसरी प्रति जारी करने का कष्ट करें।
धन्यवाद,
भवदीय
तरुण कुमार
15,सरिताविहार, नई दिल्ली।
दिनांक :30-04-2021

Remove Watermark Now

अपठित गद्यांश

1. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखें।

अपने आपको हर घड़ी और हर पल महान बनाने का नाम वीरता है। वीरता के कारनामे तो एक गौण बात है।असल वीर तो इन कारनामों को अपनी दिनचर्या में लिखते भी नहीं। दरख्त तो जमीन से रस ग्रहण करने में लगा रहता है। उसे यह ख्याल ही नहीं होता कि मुझमे कितने फल या फूल लगेंगे और कब लगेंगे? उसका काम तो अपने आप को सत्य में रखना है; सत्य को अपने अंदर कूट कूट कर भरना है और अंदर ही अंदर बढ़ना है।उसे इस चिंता से क्या मतलब कि कौन मेरे फल खाएगा या मैंने कितने फल लोगों को दिए?
वीरता का विकास नाना प्रकार से होता है। कभी तो उसका विकास लड़ने मरने में, खून बहाने में तलवार-तोप के सामने जान गंवाने में होता है। कभी प्रेम के मैदान में उनका झंडा गड़ा होता है। कभी साहित्य और संगीत से वीरता खिलती है। कभी जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की तलाश में बुद्ध जैसे राजा विरक्त होकर वीर हो जाते हैं। कभी किसी आदर्श पर और कभी किसी पर वीरता फहराती-लहराती है। जब कभी इसका विकास हुआ तभी एक नया कमाल नजर आया, एक नया जमाल पैदा हुआ, एक नई रौनक ,एक नया रंग, एक नई बहार, एक नई प्रभुता संसार में छा गई। वीरता हमेशा निराली और नई होती है। नयापन भी वीरता का एक खास रंग है। वीरता की कमी नकल नहीं हो सकती। जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता। वीरता देश- काल के अनुसार संसार में जब कभी प्रकट हुई, तभी एक नया स्वरूप लेकर आई, जिसके दर्शन करते ही सब लोग चकित हो गए, कुछ बन न पड़ा और वीरता के आगे सिर झुका दिया।

1. वीरता किसे कहते हैं?
उत्तर-अपने आप को हर समय महान बनाने का नाम ही वीरता है।जो व्यक्ति महान कार्य करते हैं, वे वीर होते हैं।

2. वीर लोग अपने कारनामों को क्यों नहीं लिखते?
उत्तर-जिस प्रकार एक वृक्ष पृथ्वी से जल ग्रहण करता रहता है और यह नहीं देखता कि उस पर कितने फल या फूल लगेंगे,उसी प्रकार वीर लोग भी होते हैं जो फल की चिंता ना कर के कर्म में ही लगे रहते हैं।

3. वीरता का विकास किस प्रकार होता है?
उत्तर-वीरता का विकास अनेक प्रकार से होता है। जैसे लड़ने- मरने में, खून बहाने में, तलवार तोप के सामने प्राण देने में,प्रेम के मैदान में, साहित्य और संगीत में, जीवन के गूढ़ तत्व और सत्य की खोज में आदि।

4. वीरता के विकास का क्या परिणाम होता है?
उत्तर-वीरता के विकास में अनोखे कार्य होते हैं और एक अपूर्व सौंदर्य पैदा होता है।नया रंग, बहार व प्रभुता संसार में छा जाती है। वीरता सदैव निराली व नई होती है।

Remove Watermark Now

5. लेखक के अनुसार वीरता के क्या लक्षण हैं?

उत्तर–वीरता की कभी नकल नहीं हो सकती, जैसे मन की प्रसन्नता कभी कोई उधार नहीं ले सकता।वीरता सदैव एक नए रूप में प्रकट होती है।वीरता के दर्शन करते ही सब लोग आश्चर्य में पड़ जाते हैं और उसके सामने सिर झुका देते हैं।

व्यवहारिक हिंदी व्याकरण

सूचना अनुसार शब्द बदलें अथवा वाक्य में परिवर्तन करें।

1. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाएं।

आदमी–आदमियत, इंसान–इंसानियत,अतिथि–आतिथ्य, ईश्वर–ऐश्वर्य,चोर–चोरी,मनुष्य–मनुष्यता, दास–दासता,कृषक–कृषि, बूढ़ा–बुढ़ापा,कारीगर–कारीगरी,प्रतिनिधि–प्रतिनिधित्व, सज्जन–सज्जनता,वानर–वानरत्व, पशु–पशुता,पंडित–पांडित्य,व्यक्ति–व्यक्तित्व,सूजन–सौजन्य, राष्ट्र–राष्ट्रीयता,मित्र–मित्रता,शत्रु–शत्रुता,सेवक–सेवा,साधु–साधुत्व,लड़का–लड़कपन,वीर–वीरता, भाई–भाईचारा, सिंह–सिंहत्व,प्रभु–प्रभुत्व,देव–देवत्व,नारी–नारीत्व,पुरुष–पुरुषत्व, बालक–बालकपन,बच्चा–बचपन,चिकित्सक–चिकित्सा,स्वामी–स्वामित्व

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए।

अनुज–अग्रज,अनाथ–सनाथ,अंधकार–प्रकाश,अनुराग–विराग,अभिमान–नम्रता, अपेक्षा–उपेक्षा,अमावस्या–पूर्णमासी,अल्पायु–दीर्घायु,आधुनिक–प्राचीन,आग्रह–दुराग्रह, आदान–प्रदान,आदर्श–यथार्थ,अपराधी–निरपराधी,आगामी–विगत,आलस्य–स्फूर्ति, आकाश–पाताल,इच्छा–अनिच्छा,इहलोक–परलोक,उग्र–शांत, उदार–संकीर्ण,उत्तम–अनुत्तम, उदात्त–अनुदात्त,उत्कृष्ट–निकृष्ट, उच्च–निम्न,उन्नति–अवनति,उत्तरायण–दक्षिणायन, उद्धत–विनीत, उपयुक्त-अनुपयुक्त,इष्ट–अनिष्ट,उपसर्ग–प्रत्यय,एकत्र–विकीर्ण,एड़ी–चोटी,ऐच्छिक–अनिवार्य

3. निम्नलिखित शब्दों के दो दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

1. अनिल–हवा, वायु, पवन
2.अमृत -सुधा,सोम, पियूष
3.अग्नि- धावक,आग,अनल
4.अश्व- घोड़ा,हय, घोटक
5.असुर -दानव,राक्षस, दैत्य
6.अध्यापक -गुरु,शिक्षक,आचार्य
7-अंधकार–तम,तिमिर,अंधेरा
8-अतिथि–मेहमान,आगंतुक,अभ्यागत
9-अनुपम–अपूर्व, अतुल,अनोखा
10-अरण्य–वन, जंगल, विपिन
11-अहंकार–अभिमान,घमंड, गर्व
12-आभूषण–गहना,अलंकार,भूषण

Remove Watermark Now

4. निम्नलिखित अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखें।

1. जो कहा ना जा सके–अकथनीय
2. जिसके पास कुछ भी ना हो–अकिंचन
3. जिसका वर्णन न किया जा सके–अवर्णनीय
4. जो मांस खाता हो–मांसाहारी
5. जिसे शर्म ना आती हो–निर्लज्ज
6. ग्रहण करने योग्य–ग्राह्य
7. पूजन करने योग्य–पूजनीय
8. जो प्रेम का पात्र हो–प्रिय
9. जो दूसरों की भलाई करता हो–परोपकारी
10. शरण में आया हुआ– शरणागत

5. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण रूप लिखिए।

धर्म–धार्मिक,अर्थ–आर्थिक,समाज–सामाजिक, परिवार–पारिवारिक,नीति–नैतिक,
राजनीति–राजनैतिक,इतिहास–ऐतिहासिक,दिन–दैनिक,अंक–अंकित,निंदा–निंदित,
जंगल–जंगली,शहर–शहरी,पूजा–पूजनीय,ईर्ष्या–ईर्ष्यालु,विधि–विधिपूर्वक,दुकान–दुकानदार,तीन–तीसरा,
निंदा–निंदक,पूजा–पूजक,मृत्यु–मृतक,रेत–रेतीला,सेवा–सेवक,भागना–भगोड़ा, घूमना–घुमक्कड़,
लूटना–लूटेरा,बाहर–बाहरी,नीचे–निचला,आगे–अगला,ऊपर–ऊपरी,वह–वैसा,यह–ऐसा, हम–हमारा

6. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए।

अचरज–आश्चर्य,आठ–अष्ट,आंख–अक्षि,आग–अग्नि,घर–गृह,जीभ–जिह्वा,दही–दधि,धुआँ–धूम्र,
कछुआ–कच्छप,कान–कर्ण, किवाड़–कपाट,कोयल–कोकिल, बूंद–बिंदु,अमी–अमृत, गेहूं–गोधूम

7. सूचना अनुसार वाक्य परिवर्तन करें।

क. वह गन्ना बहुत मीठा है । (मिठास का प्रयोग करें)
उत्तर–उस गन्ने में बहुत मिठास है।

ख. अध्यापक बच्चों को पढ़ाएगा। (वर्तमान काल में बदलिए)
उत्तर–अध्यापक बच्चों को पढ़ाता है।

ग. रोगी सो नहीं पाया। (भाव वाच्य में बदलिए)
उत्तर–रोगी से सोया नहीं गया।

घ. इतनी आयु होने पर भी वह विवाहित नहीं है। (नहीं हटाइए परंतु वाक्य का अर्थ ना बदले)
उत्तर–इतनी आयु होने पर भी वह अविवाहित है।

ङ. उसकी पत्नी अपनी सास से नहीं बोलती। (लिंग बदलकर लिखिए)
उत्तर–उसका पति अपने ससुर से नहीं बोलता।

Remove Watermark Now

च. उस लड़की ने आज एक पुस्तक पढ़ी। (वचन बदलिए)
उत्तर–उन लड़कियों ने आज अनेक पुस्तकें पढ़ीं।

छ. मैंने दिल्ली जाना है ।(शुद्ध कीजिए)
उत्तर–मुझे दिल्ली जाना है।

ज. "अंधे की लकड़ी" मुहावरे को अपने वाक्य में प्रयोग करो।
उत्तर–श्रवण कुमार अपने माता पिता की अंधे की लकड़ी था।

झ. जैसी करनी वैसी भरनी लोकोक्ति के आधार पर एक वाक्य लिखें ।
उत्तर–नौकर अपने मालिक के घर से ही चोरी करता पकड़ा गया। मालिक ने उसे घर से बाहर निकाल दिया। सच है जैसी करनी वैसी भरनी।

साहित्य सागर गद्य भाग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए ।

LESSON-7 "संदेह "

1. "भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों में, छोटा-मोटा व्यवसाय, नौकरी और पेट पालने का सुविधाओं को खोजता हुआ जब तुम्हारे घर में आया, तो मुझे विश्वास हुआ कि मैंने घर पाया"।

(क) वक्ता और श्रोता कौन हैं? दोनों का परिचय दीजिए ।
उत्तर–प्रस्तुत कथन का वक्ता रामनिहाल है तथा श्रोता श्यामा है जो एक विधवा स्त्री का आदर्श जीवन जी रही है। रामनिहाल ब्रजकिशोर बाबू के यहां नौकरी करता था और अभी श्यामा के घर रहता है ।

(ख) वक्ता टिक कर एक जगह नौकरी क्यों नहीं कर पाता था? समझा कर लिखिए ।
उत्तर– वक्ता रामनिहाल का स्वभाव था कि वह टिककर एक जगह नौकरी नहीं कर पाता था क्योंकि उसका मन हमेशा विचलित रहता था ।उसकी महत्वाकांक्षा उसे हमेशा एक दूसरी नौकरी करने को कहती थी जहाँ उसे ज्यादा पगार मिल सके।वह हमेशा उच्चाभिलाषी था। इसकी वजह से वह हमेशा नौकरियां छोड़ देता था । घर जैसा वातावरण भी उसे कहीं नहीं मिला था। श्यामा के यहां उसे घर जैसा वातावरण मिला जिससे वह वहां शांतिपूर्वक टिका हुआ था।

pdfelement

Remove Watermark Now

(ग) वक्ता को किस प्रकार विश्वास हुआ कि उसने घर पाया? समझा कर लिखिए ।

उत्तर–वक्ता रामनिहाल एक महत्वाकांक्षी युवक था।उसने बहुत से व्यावसायिक स्थानों में नौकरी की थी । जिन जिन के यहां उसने नौकरी की थी वे सभी लोग बड़े ही सुशिक्षित और सज्जन थे। वे रामनिहाल का आदर भी करते थे । लेकिन किसी भी स्थान पर रहते हुए उसे घर जैसा सुख नहीं मिला था। भिन्न भिन्न प्रदेशों में नौकरी और पेट पालने की सुविधाओं को खोजता हुआ जब वह श्यामा के घर आया तो उसके आदर्श तथा संयमित जीवन से अत्यंत प्रभावित हुआ।

रामनिहाल के प्रति श्यामा के स्नेहपूर्ण व्यवहार ने मानो उसके हृदय की रिक्तता की रिक्तता को भर दिया और उसे विश्वास हुआ कि उसे घर मिला मिल गया है।

(घ) शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर–'संदेह' कहानी का शीर्षक जिज्ञासापूर्ण है। कहानी का आरंभ रामनिहाल द्वारा अपने बिखरे हुए सामान को समेटने से होता है। उसके हाथ में एक चित्र है। पाठकों के मन में जिज्ञासा उठने लगती है कि रामनिहाल कौन है, उसके हाथ में किसका चित्र है, वह अपना सामान क्यों समेट रहा है ? श्यामा,जिसके यहां वह रहता है, एक विधवा,दयालु व सच्चरित्रा स्त्री है। रामनिहाल उसे पटना से आए मनोरमा के पत्रों तथा निमंत्रण के बारे में बताता है। बस यहीं से शीर्षक स्पष्ट होने लगता है ।

जिन ब्रजकिशोर के यहां वह काम करता था, मोहन बाबू उनके संबंधी थे। मनोरमा उनकी पत्नी है। मोहन बाबू को लगता है कि उन्हें संसार में बहुत धोखा मिला है, इस कारण उनका व्यवहार कुछ असामान्य सा हो गया है।उन्हें संदेह ही नहीं पूरा यकीन है कि ब्रजकिशोर उन्हें पागल घोषित करके उनकी सम्पत्ति को हड़पना चाहते हैं। मोहन बाबू ने चाहते हुए भी मनोरमा पर संदेह करते हैं कि वह भी ब्रजकिशोर से मिली हुई है।

मनोरमा के रामनिहाल से सहायता मांगने पर रामनिहाल को संदेह होता है कि शायद मनोरमा उसे चाहने लगी है।अंत में श्यामा को रामनिहाल के हाथ में एक चित्र देखकर संदेह होता है कि रामनिहाल मनोरमा को चाहने लगा है और उसके हाथ में उसी का चित्र है । लेकिन उसके स्थान पर अपना चित्र देखकर वह आश्चर्यचकित हो जाती है। वह रामनिहाल को समझाते हुए कहती है कि वह प्रेम के चक्कर में बिल्कुल ना पड़े। हां, जाकर उस दुखिया मनोरमा की मदद कर वापस आ जाए, मनोरमा एक सच्चरित्रा स्त्री है। इस तरह से कहानी का शीर्षक "संदेह" संक्षिप्त, सटीक व उद्देश्यपूर्ण है।

LESSON-8 " "

प्रश्न 2"

LESSON-9"भेड़ें और भेड़िये"

प्रश्न 3- " मुसीबत में फंसे भेड़िए ने आखिर सियार को अपना गुरु माना और आज्ञा

Remove Watermark Now

पालन की शपथ ली"।

(क) भेड़िया किस मुसीबत में फ़ंस गया था? सियार ने उसे क्या आश्वासन दिया और क्यों?

उत्तर–भेड़िया जंगल में होने वाले पंचायत के चुनावों की बात को सुनकर चिंतित था क्योंकि उसे यह लग रहा था कि वन प्रदेश में यदि नई सरकार बन गई तो उनका राज्य चला जाएगा। फिर उन्हें सूखी हड्डियां तक खाने को नहीं मिलेंगी। उसकी बातों को सुनकर सियार ने यह आश्वासन दिया, "आप खिन्न मत होइए सरकार ! एक दिन का समय दीजिए। कल तक कोई योजना बन ही जाएगी , मगर एक बात है। आपको मेरे कहे अनुसार कार्य करना पड़ेगा । " भेड़ियों के साथ साथ यह मुसीबत सियारों की भी थी क्योंकि वे अपने भोजन के लिए भेड़ियों पर निर्भर थे। जब भेड़िया अपना शिकार खा लेता है तब यह सियार हड्डियों में लगे मांस को कुतरकर खाते हैं और हड्डियां चूसते हैं। अतः उन्हें कोई हल तो निकालना ही था।

(ख) भेड़िए ने क्या शपथ ली और क्यों? समझा कर लिखिए।

उत्तर–भेड़िए ने सियार की आज्ञा पालन की शपथ ली क्योंकि भेड़िए को इसके अलावा कोई उपाय सूझ भी नहीं रहा था। भेड़ियों की संख्या बहुत कम थी। भेड़ें और अन्य छोटे पशु नब्बे प्रतिशत थे। वे केवल दस प्रतिशत। ऐसे में किसी योजना के द्वारा ही उन पर विजय पाई जा सकती थी।

pdfelement

(ग) सियार ने भेड़िए की सफलता के लिए क्या योजना बनाई? समझा कर लिखिए।

उत्तर–सियार को भेड़िए के साथ-साथ अपने जीवन की भी चिंता हो रही थी इसलिए उसने यह योजना बनाई कि तीन रंगे सियार तैयार किए जाएंगे जिन्हें चुनाव प्रचार के काम में लगाया जाएगा। पीला वाला सियार विद्वान, विचारक, कवि व लेखक, नीला सियार नेता और पत्रकार तथा हरा धर्मगुरु बनकर भेड़ों को मूर्ख बनाने का कार्य करेंगे। बूढ़े सियार को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि भेड़े उनके द्वारा बनाई गई इस योजना के द्वारा सहज ही मूर्ख बन जाएंगी।

(घ) 'भेड़ें और भेड़िए' नामक कहानी में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–भेड़ें और भेड़िए एक व्यंग्यात्मक कहानी है। इस कहानी के माध्यम से लेखक हरिशंकर परसाई जी ने विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से आज के बेईमान नेताओं पर करारा व्यंग्य किया है जो चुनाव में खड़े होकर भोली-भाली जनता को अपनी चतुराई से मूर्ख बनाते हैं, उनसे बड़े बड़े झूठे वायदे करते हैं और जब भोली-भाली जनता उनकी मीठी मीठी बातों में आ जाती है और उन्हें वोट दे देती है तो फिर सत्ताधारी जनता की भलाई के कार्य करने के बदले अपनी जेबें भरने में लग जाते हैं। इस प्रकार लेखक ने लोकतांत्रिक प्रणाली पर तीखा व्यंग्य किया है।

Remove Watermark Now

साहित्य सागर पद्य भाग

निम्नलिखित अवतरणों को पढ़कर उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए।

LESSON-7"विनय के पद"

प्रश्न 1-" ऐसो को उदार जग माहीं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर राम सरिस कोउ नाहीं ।।
जो गति जोग विराग जतन करि नहीं पावत मुनि ज्ञानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहूं प्रभु ना बहुत जिय जानी ।।
जो संपत्ति दस सीस अरप करि रावण शिव पहं लीन्हीं।
सो संपदा विभीषण कहं अति सकुच सहित प्रभु दीन्हीं।।

तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तो भजो राम काम सब पूरन कर कृपानिधि तेरो।। "

(क) प्रस्तुत पद के कवि कौन हैं? वह किसके उपासक थे तथा किस प्रकार की भक्ति को महत्व देते थे?
उत्तर–प्रस्तुत पद के कवि श्री तुलसीदास जी हैं।तुलसीदास जी अयोध्यावासी दशरथ पुत्र श्री राम के उपासक थे ।वे अपने राम को स्वामी और स्वयं को उनका दास मानते थे इसलिए उनकी भक्ति दास्य भाव की भक्ति कही जाती है। कवि का यह मानना है कि यदि मनुष्य संसार के जन्म–मृत्यु के बंधन से पार उतरना चाहता है तो उसे राम की भक्ति का सहारा लेना ही होगा।

(ख) 'ऐसो को उदार जग माहीं' से कवि का क्या तात्पर्य है?कवि ने किसे उदार कहा है और क्यों?
उत्तर–कवि कहना चाहते हैं कि भगवान श्री राम जैसा उदार और दयावान व्यक्ति इस संसार में दूसरा और कोई नहीं है।प्रभु श्री राम अत्यंत दयालु एवं कृपालु हैं और बिना किसी प्रकार की सेवा के भी वह दीन दुखियों पर अपनी कृपा करते हैं।

(ग) गीध और शबरी को किसने, कौन सा स्थान दिया और क्यों?
उत्तर–गिद्ध अर्थात जटायु के आत्म त्याग और सबरी अर्थात शबर जात की स्त्री की भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान राम ने उन्हें परम पद दिया। जटायु ने सीता की रक्षा करने में अपने प्राणों की परवाह नहीं की थी इसलिए श्रीराम ने उन्हें अपने पिता का स्थान दिया एवं उनका दाह संस्कार किया तथा शबरी ने बड़े भोलेपन से प्रेम पूर्वक राम को अपने द्वारा चखे हुए मीठे बेर खिलाए थे जिन्हें बिना किसी संकोच के श्रीराम ने खा लिए थे।

Remove Watermark Now

(घ) 'दस सीस 'का यहां क्या संदर्भ है? समझा कर लिखिए।

उत्तर–'दस सीस 'का शाब्दिक अर्थ है है दस सिर। यहां पर इसका प्रयोग लंकापति रावण के लिए किया गया है। कहा जाता है कि रावण के दस सिर एवं बीस भुजाएं थीं। रावण भगवान शिव का परम भक्त था। अपने आराध्य देव को प्रसन्न करने के लिए उसने अपने दसों सिरों को एक-एक करके शिव जी के चरणों में अर्पित कर दिए थे। रावण के सिर अर्पित करने के उपरांत शिव जी की कृपा से उसके सिर स्वाभाविक रूप से फिर से जुड़ जाते थे। भक्त सदैव अपनी प्रिय वस्तु भगवान को अर्पित करना चाहता है इसलिए रावण ने भी शिवजी को प्रसन्न करने के लिए इतना बड़ा त्याग किया था।

(ङ) भगवान शिव से रावण को संपत्ति के रूप में क्या-क्या प्राप्त हुआ?

उत्तर–रावण की तपस्या एवं उसके महान त्याग से भोलेनाथ शिव अत्यंत प्रसन्न हो गए। उन्होंने रावण को यश, वैभव एवं अतुल संपदा का स्वामी बना दिया । रावण की इच्छा के अनुसार उन्होंने उसे यह भी वरदान दिया कि वह तीनों लोकों(स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक तथा पाताल लोक) में अजेय हो जाए । उसे कोई भी जाति परास्त ना कर सके। मनुष्य का तो उसे कोई भी भय न था। शिवजी से इच्छित वरदान पाकर वह अभिमानी हो गया और सोने की लंका जो कि समुद्र की चारदीवारी से गिरी थी, का महाराजा बनकर तीनों लोकों पर राज करने लगा। इस प्रकार शिवजी को प्रसन्न कर रावण अपार संपदा का स्वामी बन गया था।

(च) भगवान राम ने विभीषण के प्रति किस प्रकार उदारता दिखाई?

उत्तर–विभीषण रावण का छोटा भाई था वह श्रीराम का भक्त था अतः उसने राम और रावण के संघर्ष में श्री राम का पक्ष लिया रावण की पराजय के पश्चात श्री राम ने उसकी सारी की सारी अपार संपत्ति अत्यंत विनम्र भाव से विभीषण को सौंप दी। इससे श्री राम की शालीनता वह भक्त- वत्सलता प्रकट होती है जिसके लिए तुलसीदास ने उनकी प्रशंसा की है।

प्रश्न 2- "जाके प्रिय न राम वैदेही।
तजिए ताहि कोटि वैरी सम जद्पि परम स्नेही।।
तज्यो पिता प्रहलाद विभीषण बन्धु भरत महतारी।
बलि गुरु तज्यो, कंत ब्रज बनितन्हि, भए मुद मंगलकारी।।
नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्यव्य जहां लो।
अंजन कहा आप जेहि फूटे बहु तक कहौं कहाँ लो ।।
तुलसी सो सब भांति परमहित पूज्य प्राण ते प्यारो ।
जासों होय सनेह राम-पद , एतो मतो हमारो।।

(क) 'राम'और 'वैदेही' शब्द किन के लिए प्रयुक्त किए गए हैं? उनके विषय में संक्षेप में लिखिए।

उत्तर–'राम'अर्थात श्री राम,अयोध्या पति राजा दशरथ एवं महारानी कौशल्या के ज्येष्ठ पुत्र थे। वह स्वभाव से ही विनम्र, करुणामय,सदाचारी एवं आदर्श युवा थे। उनका विवाह जनक नंदिनी

Remove Watermark Now

सीता से हुआ था अपने पिता एवं माता कैकई के वचनों का पालन करने के लिए वह चौदह वर्ष वनवास में रहे।वहां पर रावण ने धोखे से सीता जी का हरण कर लिया।तब श्री राम ने हनुमान जी, सुग्रीव ,जामवंत आदि की सहायता से रावण का वध कर डाला।
'वैदेही'शब्द सीता जी के लिए प्रयुक्त किया गया है। वैदेही अर्थात विदेह, राजा जनक की पुत्री सीता।कहा जाता है कि उनका जन्म धरती से हुआ था इसलिए उन्हें भूमिका भी कहते हैं। धनुष यज्ञ में श्री राम के द्वारा शिवजी का धनुष भंग किए जाने पर उनका विवाह श्री राम के साथ हुआ था।

(ख) प्रस्तुत पद में तुलसीदास किन्हे त्यागने के लिए कह रहे हैं और क्यों?
उत्तर–प्रस्तुत पद में कवि तुलसीदास जी ऐसे व्यक्तियों का साथ त्यागने की सलाह दे रहे हैं जो सीता जी तथा रामचंद्र जी को अपना प्रिय नहीं मानते हैं। जिस तरह राम भक्ति के कारण विभीषण ने अपने भाई रावण का तथा भरत ने अपनी माता कैकई का साथ छोड़ दिया था उसी प्रकार सभी को श्री राम की शरण में जाना चाहिए। कवि राम के अनन्य भक्त हैं। उनके अनुसार केवल राम का नाम ही है जो हमें भवसागर के पार उतार सकता है।

(ग) 'नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लो' पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
उत्तर–'नाते नेह राम के मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लो' पंक्ति का अर्थ यह है कि जो राम से नाता रखता है अर्थात प्रभु श्री राम की भक्ति करता है वही व्यक्ति हमारा प्रिय और सुहृदय होना चाहिए। तुलसीदास जी का कहना है कि ऐसे अंजन को लगाने से क्या फायदा जो आंख ही फोड़ दे अर्थात उस व्यक्ति को अपना मित्र बनाने से क्या फायदा जो हमारा जीवन ही बर्बाद कर दे।

(घ) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए ।
सुहृद, सुसेव्य,अंजन, सनेह
उत्तर–सुहृद– संबंधी, प्रियजन
सुसेव्य– आराधना करने योग्य
अंजन– सुरमा, काजल
सनेह– प्रेम

(ङ) प्रस्तुत पद का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर–तुलसीदास जी कहते हैं कि राम–सीता से प्रेम न करने वाले व्यक्ति से हमें अपने संबंध तोड़ देने चाहिए। यहां कवि ने प्रहलाद, विभीषण, भरत तथा ब्रजनारियों के उदाहरण दिए हैं। हमें राम से प्रेम करना चाहिए इसी में हमारी भलाई है।

Remove Watermark Now

LESSON-8"भिक्षुक''

प्रश्न 3- " वह आता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ।
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को भूख मिटाने को
मुंहफटी पुरानी झोली को फैलाता–
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।"

(क) दो टूक कलेजे के करता से कवि का क्या तात्पर्य है? समझा कर लिखिए।
उत्तर–'दो टूक कलेजे के करता 'से कवि का तात्पर्य उस भिखारी द्वारा अपना मन छोटा कर देना है । वह अपनी दयनीय अवस्था को सोचकर अत्यंत दुखी हो जाता है। कवि भी उसको देखकर उदास हो जाते हैं। जब वह भिखारी भोजन पाने के लिए अपनी फटी झोली फैलाए लोगों की ओर याचनामयी दृष्टि से देखता हुआ एक गली से दूसरी गली की ओर जाता है तो वह अंदर ही अंदर टूट जाता है। वह अपने भाग्य पर पछताता है।उसे देखकर कवि का ह्रदय भी आहत हो जाता है।

(ख) 'लकुटिया टेक' से क्या तात्पर्य है?लकुटिया टेक कर कौन चल रहा है और क्यों ?
उत्तर–लकुटिया टेक से तात्पर्य है –लाठी का सहारा लेना ।लाठी का सहारा लेकर एक भिखारी चल रहा है। वह बहुत ही दुर्बल एवं अशक्त हो गया है। कई दिनों से भूखा होने के कारण वह चलने में भी असमर्थ है इसलिए वह लाठी का सहारा लेकर चल रहा है।

(ग) "पेट पेट दोनों मिलकर हैं एक" पंक्ति से क्या तात्पर्य है?
उत्तर–"पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक"पंक्ति से तात्पर्य है कि भिक्षुक कई दिनों से भूखा है इसलिए उसका खाली पेट पीठ से मिला हुआ प्रतीत होता है।

(घ) भिखारी क्यों पछताता हुआ आ रहा है ?
उत्तर–भिखारी भूख के कारण बहुत कमजोर हो गया है ।कोई भी उसे अन्न का एक दाना भी नहीं दे रहा है। वह अपनी इस दयनीय स्थिति पर दुख व्यक्त करता हुआ पछताता हुआ चला रहा है। साथ ही उसका परिवार भी है। अपने परिवार का लालन पालन करना उसकी ज़िम्मेदारी है जिसमें वह असमर्थ है । इन्हीं सब कारणों से भी वह पछता रहा है।

Remove Watermark Now

LESSON-9"चलना हमारा काम है"

प्रश्न 4."कुछ कह लिया,कुछ सुन लिया
कुछ बोल अपना बंट गया
अच्छा हुआ तुम मिल गईं
कुछ रास्ता ही कट गया ।
क्या राह में परिचय कहूं ,

राही हमारा नाम है
चलना हमारा काम है।"

(क)'बोझ' शब्द से क्या आशय है? कवि इस बोझ को किस तरह बांटना चाहते हैं?
उत्तर-वह शब्द का अर्थ है- 'भार'। हमारे सिर, कंधों अथवा पीठ पर रखा गया बोझ हमें थकान का आभास कराता है। यहां पर 'बोझ' शब्द का अर्थ जीवन के कर्तव्य- मार्ग में आने वाली बाधाओं एवं मुसीबतों से है जो लक्ष्य प्राप्ति में हमारे लिए रुकावट बन जाती हैं। इस बोझ को कभी दूसरों के साथ मिलजुल कर कम करना चाहते हैं। वह कहते हैं कि जीवन के रास्ते में मिलने वाले यात्रियों के साथ अपने सुख-दुख को साझा करके हम अपने बोझ को हल्का कर सकते हैं। कहा भी गया है कि सुख बांटने से बढ़ते हैं और दुख बांटने से कम हो जाते हैं।

(ख) कवि का रास्ता किस प्रकार कट जाता है? रास्ता कटने का क्या अभिप्राय है?
उत्तर–रास्ता कटने से अभिप्राय आराम से यात्रा करने से है। जब यात्रा आराम से तय होती है, मुसीबतों से कम सामना होता है तब यह कहा जाता है कि रास्ता कट गया।
कवि को भी जब जीवन के पथ पर संगी साथी मिल जाता है तो उसके मिलने से, उसके साथ चलने से और अपना सुख दुख बांटने से, उन दोनों के रास्ते आसान हो जाते हैं।

(ग) कवि उस साथी को अपना परिचय किस प्रकार देते हैं? इससे कवि के विषय में क्या ज्ञात होता है?
उत्तर– कवि अपनी जीवन यात्रा के मार्ग में मिलने वाले उस साथी को अपने परिचय के बारे में कहते हैं कि वह रास्ते में अपना परिचय क्या कह कर अथवा किस प्रकार दें। बस वे उनके बारे में यह जान लें कि उनका नाम 'राही' है क्योंकि वह (कवि) जीवन पथ पर चलने वाले एक मुसाफिर ही तो हैं। कवि की इस बात से उनके विषय में पता चलता है कि वह

Remove Watermark Now

सरल स्वभाव के हैं।उनके स्वभाव में सादगी होने के साथ-साथ एक तरह की मस्ती भी है। वह बातूनी भी नहीं है ।मार्ग में साथी के मिल जाने पर भी वह न तो रुकते हैं और न ही बातों में लग जाते हैं।अपना संक्षिप्त परिचय देकर वह उसे अपने साथ लेकर पुनः जीवन के पथ पर आगे बढ़ जाते हैं। इससे यह भी ज्ञात होता है कि अपनी यात्रा तथा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह बहुत गंभीर हैं और बिना किसी बाधा के वह उसे पूरा करना चाहते हैं।

(घ) जीवन पथ पर चलने के लिए कवि क्या सुझाव एवं सलाह दे रहे हैं?

उत्तर-जीवन के रास्ते पर चलने के लिए कवि ने हमें अनेक अमूल्य सुझाव दिए हैं।कवि कहते हैं कि जब प्रकृति ने हमारे पैरों में गति दी है तथा हमारे तन और मन में पर्याप्त इच्छाशक्ति दी है तो जीवन पथ पर अपनी मंजिल प्राप्त होने तक हमें निरंतर चलते रहना चाहिए। चाहे कैसा भी अवरोध आए,कहीं किसी स्थान पर नहीं रुकना चाहिए।जब तक हमें =अपनी मंजिल नहीं मिल जाती तब तक हमें रास्ते में विश्राम करने के लिए भी रुकना नहीं चाहिए क्योंकि जीवन निरंतर चलते रहने का दूसरा नाम है।निरंतर चलना ही हमारा काम है।

(ङ) प्रस्तुत कविता का उद्देश्य लगभग 50 शब्दों में लिखिए।

उत्तर-प्रस्तुत कविता का मुख्य उद्देश्य मानव को विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा देना है।कवि के अनुसार गति ही जीवन है।जीवन में सफलता- असफलता, दुख-सुख आते रहते हैं।जीवन की राह में हार-जीत तो लगी रहती है, अतः सभी परिस्थितियों में समभाव रखते हुए हमें निरंतर गतिशील रहना चाहिए क्योंकि चलना हमारा काम है।जीवन एक सफ़र है।मनुष्य को बिना किसी से कोई शिकायत किए सब तरह की परिस्थितियों को ईश्वर की देन समझकर जीवन पथ पर प्रगति की राह पकड़ कर निरंतर चलते रहना चाहिए।

pdfelement

----------*----------*----------